

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर निर्मित

पाठ्यक्रम

शास्त्री तृतीय सत्रार्द्ध [जैनदर्शन]

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
[संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित]
जनकपुरी नई दिल्ली

शास्त्री-तृतीय-सत्रार्द्ध [पारम्परिक विषय]

जैनदर्शनम्

पत्र संख्या - DSCC - 06

पाठ्यक्रम विवरणम् - श्रावकधर्मः

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

श्रावकधर्मस्य अवधारणा, तदर्थञ्च पुरुषार्थचिन्तनम्, श्रावकधर्मपुरुषार्थे सम्यगदर्शनज्ञानयोः
भूमिकाः, सम्यक्त्वस्य अष्टाङ्गानां विवेचनं, प्रमाणनयात्मकसम्यज्ञाननिर्देशः।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

सम्यक्चारित्रस्यावधारणा, हिंसादिभ्यो विरतिर्वतम्, अहिंसादिपंचब्रतानि, अहिंसाब्रतस्य प्रामुख्यं
तदितराणि ब्रतानि तस्यैव निर्दर्शनानि, हिंसाऽहिंसयोः अवधारणा, अहिंसासत्याचौर्यब्रह्मचर्य-
परिग्रहपरिमाणब्रतानि, रात्रिभुक्तित्यागब्रतम्

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

गुणब्रतस्य स्वरूपं तात्पर्यञ्च, त्रीणि गुणब्रतानि-दिग्ब्रतम्, देशब्रतम्, अनर्थदण्डब्रतम्।
शिक्षाब्रतस्यावधारणा तद्देदाश्च-सामायिकब्रतम्, प्रोषधोपवासब्रतञ्च । भोगोपभोगपरिमाणब्रतम्,
अतिथिसंविभागब्रतञ्च, सल्लेखनाविधिश्च ।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

ब्रतानां परिपालने सावधानता । तदभावेऽतिचारविचारः, सम्यक्त्वस्यातिचाराः, अहिंसासत्याचौर्य-
ब्रह्मचर्यपरिग्रह – परिणामब्रतानामतिचाराः, गुणब्रतेषु दिग्ब्रतस्य, देशब्रतस्य अनर्थदण्डब्रतस्य
चातिचाराः शिक्षाब्रतेषु सामायिकप्रोषधोपवासभोगोपभोगपरिमाणातिथिसंविभागानामतिचाराः,
सल्लेखनायाः अतिचाराः, पर्यावरणसंरक्षणे श्रावकधर्मस्य भूमिका।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - पुरुषार्थसिद्ध्युपायः (अमृतचन्द्राचार्यः) पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

सहायकग्रन्थाः – 1. रत्नकरण्डश्रावकाचारः (समन्तभद्रः) वीतराग विज्ञान प्रकाशन, अजमेर

2. सागारधर्ममृतम् (पं. आशाधरः) श्रीमद् रायचन्द्र आश्रम, अगास

3. लाटीसंहिता-राजमल्ल जैन, सम्पा.- पं. हीरालाल शास्त्री श्री माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला समिति, मुम्बई

4. श्रावकधर्मसोपानम् (प्रो. एस. के. सिंघई) प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संस्थान, लाडनूँ

5. पद्मनन्दिपञ्चविंशतिका- देशब्रतोद्योतनाधिकारः (आ. पद्मनन्दि)

श्री कुन्दकुन्द दिग्म्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर

जैनदर्शनम्
पत्र संख्या - DS CC - 07
पाठ्यक्रम विवरणम् - स्वयंभूस्तोत्रे दार्शनिकतत्त्वम्

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

संस्कृतस्तोत्रसाहित्ये जैनस्तोत्राणां स्थानम्, प्रमुखानि जैनदार्शनिकस्तोत्राणि। स्वयंभूस्तोत्रं तत्कर्ता च समन्तभद्रः, स्वयंभुवस्तीर्थकराः, तेषां स्तवनस्य प्रयोजनम्, तत्र स्तवने दार्शनिकपृष्ठभूमिः, स्वयंभूस्तोत्रस्य सामाजिकेषु बहुमानता तत्र दार्शनिकतत्त्वम्।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

वृषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभजिनस्तवनेषु
दार्शनिकतत्त्वसमीक्षणेन तत्त्वाधिगमः।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

सुविधि-शीतल-श्रेयोनाथ-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्तिजिनस्तवनेषु
दार्शनिकतत्त्वसमीक्षणेन तत्त्वाधिगमः।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुब्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वीरजिनस्तवनेषु
दार्शनिकतत्त्वसमीक्षणेन तत्त्वाधिगमः।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - स्वयंभूस्तोत्रम् (आचार्यसमन्तभद्रः) श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, काशी सहायकग्रन्थाः –

- पञ्चस्तोत्रसंग्रहः (महाकवि: धनञ्जयः) जैनविद्यापीठ, सागर
- जैन साहित्य का इतिहास (पं. कैलाशचन्द्र जैन) श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, काशी
- तीर्थड़कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा (डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री) भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत्परिषद्
- चतुर्विंशति जिनस्तुति (श्रीसुन्दरगणिप्रणीत) श्री दिग्म्बर जैन विजया ग्रन्थ प्रकाशन समिति, जयपुर
- संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान (डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री) भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली